राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 9 अंक : 107 15 मार्च 2006

सदस्यता शुल्क : —————— वार्षिक : रुपए 40/–
भारत व नेपाल में एक प्रति: रुपए 5/–

✪ इस अंक में ✪

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू 38
3. सत्संग (महर्षि शिवव्रतलाल जी) 39
4. अनमोल वचन व ज्ञान सार 40
5. सत्संग भावांश 41
6. सतगुरु कृपा 43
7. अनमोल चरित्र से 45
8. हुज़ूर महाराज जी का संक्षित जीवन परिचय 46

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org
इ-मेल:- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 118
दिनांक : 6 नवम्बर, 1993
समय : रात्रि

मेरा हरि से मिलन कैसे हो, गली तो चारों बंद पड़ी।
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह ने घेरी चारों गैल।
जिन गलियों मेरा प्रीतम बसता कैसे करूं वाकी सैल।।
पांच पच्चीस पहरवा ठाडे, रोक लिए सब ठाम।
ये विधना ने कैसी किन्ही, बैरी बसाये म्हारे गाम।।
आशा त ष्णा खड़ी दुहेली, इनमें रहा समाय।
कनक कामिनी गहरा फंदा, अंत तजा नहीं जाय।।
भक्ति ज्ञान वैराग योग का, मार्ग दिया बताय।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, वहां कोई बिरला जाय।।

कैसे मिलू हरि संग जाय, मिलना कठिन है।
ओघट घाट बाट रपटीली पांव नहीं ठहराय।
सुन्न शिखर पे सेज पिया की मोसे चढ़ा न जाय।।
लोक लाज कुल की मर्यादा, मो से सही न जाय।
घर में पिया परदेश बराबर, देखे बिन रहा न जाय।।
आसा त ष्णा त्याग बावरी, गगन मंडल चढ़ जाय।
गम से दूर अगम से आगे, सुरत झकोले खाय।।
रामानन्द मिले मोहे सतगुरु, मार्ग दिया बताय।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, पूठा न धरते पांय।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!

राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! भाई रूपचन्द ने भी कबीर साहब के शब्द गाए। मास्टर जी ने भी दो शब्द कबीर साहब के गाए। अगर कोई उस लाइन का आदमी खड़ा होकर कहे कि तुम्हारे पास उस लाइन की पूंजी तो हैं नहीं और तुम हम से कहते हो कि ये शब्द को जानते नहीं हैं कि ये शब्द के भेदी नहीं हैं। परन्तु पूंजी तो हमारी ही बरतते हो। तो क्या तुम्हारे पास जवाब है? पर मैं आपको जवाब बता देता हूं।

आए एको ठौड़ से, उतरे एको घाट।
समझों का मत एक है, अनसमझे बारह बाट।।

अटपट कहना तो अनसमझों की बातें हैं। जो साधन–अभ्यास करके एक मंजिल भी तय कर ले तब भी उनका भ्रम दूर हो जाता है। जब तक अभ्यास नहीं करते, वे विरोध करते रहते हैं। झगड़ा बाजी करते हैं। दूसरों की निंदा बुराईयां करते रहते हैं। आपने सुना होगा मैं एक बात सत्संगों में कहा करता हूं कि कई महात्मा कहते हैं–

एको ब्रह्म सर्वः द्वितिय नास्ते।

जो कई ब्रह्मनेष्ठा महात्मा होते हैं उन्हें हर जगह एक ब्रह्म ही ब्रह्म दिखता है। राधास्वामी मत वाले, कबीर पंथ वाले या संतमत वाले कहते हैं कि यह तो नीचे रह गया। एको ब्रह्म तो काल का देश है। जो चौथे लोक के ऊपर जाते हैं उनके विरोध चलते हैं। झगड़े बाजी चलते हैं। पर ये एकोब्रह्म सर्वः द्वितिय नास्ते, वाले कहते हैं उनके विरोध नहीं चलते हैं। कभी आपने ख्याल किया कि जो कहते हैं कि हम चौथे लोक के हैं, वे पहुंचे नहीं है और न ही उन्होंने कभी पहुंचने की कोशिश ही की है। वे तो झगड़ा बाजी ही करते रहते हैं। संतों का मार्ग तो प्रेम का और करणी का है। जितने

संत आए सब एक ही घर से आये और अभ्यास साधन से एक ही घर पहुंचते हैं। सो मैंने आप लोगों को कबीर साहब की वाणी बताई कि साधन अभ्यास किया करो। कबीर साहब पूर्ण पुरुष थे। मास्टर जी ने दो शब्द कहे।

कैसे मिलूं हरि संग जा, गली तो चारों बंद पड़ी।

पता नहीं कबीर साहब का क्या दावा था, क्या बात थी? मैं तो अपने विचार से बताता हूं कि उस परमात्मा से किस तरह मिला जाता है। चारों गली तो बंद पड़ी हैं। ये गली किसने रोक ली हैं? ये काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ने रोक ली हैं। जो इन चीजों से आगे निकल जाता है वह चौथे लोक की बातें कह सकता है। अगर इनके बीच में ही रह जाता है तो वह चौथे लोक की बातों का अधिकारी नहीं है। वे चारों गली किसने रोकी? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ने रोकी। फिर अहंकार कितनी दूर तक चलता है? सतलोक के निचले दरवाजे को टक्कर मारता है। अब सोचो? वे झूठी ही बातें कहते हैं कि हम प्रमुख जगह पहुंच गए। हम उस जगह पहुंच गए। हमने दो मंजिलें तय कर ली। हमने चार मंजिलें तय कर ली। पांच मंजिलें तय कर ली। तो क्या तुलसीदास की बातें नहीं सुनी?

काम, क्रोध, मद लोभ की जब तक घट में खान।
तुलसी पंडित और मूर्खा दोनों एक समान।।

कबीर साहब ने भी कह दिया–

कामी क्रोधी लालची, इनसे गुरु भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जात वर्ण कुल खोय।।

अब इन्होंने चारों गली रोक ली। हम कैसे पहुंचेगे? हम चारों गलियों को खोलने की कोशिश कैसे करें? कोशिश तो हरेक करता है। पर मेरे पास तो एक ही निशाना था। मैंने तो और कुछ समझा ही नहीं। न मैं पढ़ा लिखा हूं और न कुछ जानता। एक

सहारा है।

एक तुम्हारा आसरा एक तुम्हारी आस।
नितानन्द बंधन पड़े तो काटो जम फांस।।

एक वही आसरा है। एक सतगुरु का आसरा है। मेरे पास कोई भी सहारा नहीं था। एक दाता अरमान साहब का सहारा था। उनकी दया का हाथ था। सच पूछो तो मैंने कहा–यह क्या कर दिया? आपने किया तो यह क्या किया? उन्होंने कहा कि ऐसा मैंने नहीं किया। यह तो महर्षि जी का किया हुआ है। पर मैं एक बात कहता हूं। मेरा हुक्म है। यह काम तो करना पड़ेगा। कराने वाले आप ही करा लेते हैं। एक तरह से खुश भी था कि पता नहीं तू क्या बन गया है। दूसरी तरफ यह बात भी दिल में थी कि यह क्या बबाल मिल गया है। आज मैं आप लोगों को कहता हूं कि यह उन लोगों का काम था, जिनके पास चारों तरफ दस बीस तो पहरेदार रहते हैं। जिन्हें मौज और ऐश लूटनी थी। मेरे जैसे का काम नहीं था। मेरे जैसे को तो कहीं एकान्त में कुटिया में पड़े रहना था। पर करता भी क्या? दोनों तरफ से घिर गया। इधर सतगुरु का हुक्म भी मानना। उनका हुक्म नहीं मानूं तो मर गया। ऐ सत्संगियो ! मुझे तो समझ में नहीं आई कि वह गली कौन सी है और क्या है? मैने तो उन गलियों को खोलने के लिए एक ही चीज पकड़ी थी। सतगुरु का सरना, सतगुरु की शरण। सतगुरु की शरण हरेक नहीं ले सकता है। चारों गली किस तरह खुलनी थी? मैं वकील साहब की बातें बताता हूं। मैं इनकी गली खुलने की बातें बताता हूं। इसमें नाम नहीं लिया और इसकी गली खुली, वे बातें बताता हूं। मैं इनके गांव में गया। इसकी आंखें देखी और चेहरा देखा। ये शराब में धुत था। इस आदमी ने कभी नहीं कही कि शराब छुड़ाओ। इसने फोटो जेब में रखा और शराब छोड़ी। ये मेरे पास आया और कहा कि मैंने तीन लाख की शराब पी ली।

मैंने कहा–फिर कौन सी यज्ञ लगाई? पर शुक्र है कि अब शराब छोड़ दी। यह भी अच्छा है। ये बहुत काम करते हैं। अब इसकी गली कैसे खुली? इसने तो संसारी गली मांगी थी। वह खुल गई। आज इनके पास कोई भी कमी नहीं है। वह गली खुल गई। फिर दूसरी कौन सी गली खुली? शराब छुट गई। इनके पिता जी ने यह कहा था कि मैं शराब नहीं छोड़ सकता। मैंने कहा–क्यों? तो उसने कहा–जब मेरे मन में शराब की आती है तो मैं कहता हूं कि हे राधास्वामी दयाल! मुझे शराब दे। तो शराब की बोतल अपने आप ही आ जाती है। मैंने कहा–तेरी शराब छुटवानी है। कुछ दिन में इसके गड़बड़ हो गई। डाक्टर ने कहा–शराब पी ली तो मर जाएगा। अब वह मरने से डरा करता था।

सो शराब छोड़ दी। मैंने कहा–सुना ताऊ? उसने कहा–भाई शराब तो छुट गई। मैंने बताया कि राय सालिगराम के पास एक औरत गई। उसने कहा–महाराज ! मेरा धनी चोरी करता है। इसकी चोरी छुटवाओ। उन्होंने कहा–भाई ! तू चोरी छोड़ दे। उसने कहा–नहीं करूंगा, महाराज ! उसने 15–20 दिन छोड़ी। फिर चोरी करने लग गया। वह फिर गई और महाराज जी ने कहा–अरे ! तू चोरी छोड़ दे। बहुत बुरी होती है। उसने कहा–छुट नहीं सकती है जी। अब उन्होंने कहा–तू जा। पर तेरी चोरी छुटवानी है और तेरी बहू को सुहागन रखना है। इन बातों को कोई भी नहीं समझा।

महीना 20 दिन के बाद वह 'बाय' में जुड़ गया। बारह महीने बाय में जुड़ा रहा। वह आया और उसने कहा–महाराज जी ! दया कर दो। उन्होंने कहा–अब चोरी तो छुट गई होगी? बहू को भी सुहागन रख दिया। उसने कहा–बस ! आगे तो कभी भी चोरी नहीं करूंगा। वह तो उनकी दया ही थी। उन्होंने क्या किया? वह ठीक हो गया। सो इसी तरह से मैंने कहा कि ताऊ ! तेरी शराब तो छुट

गई है। उसने कहा–शराब छुट गई है। मैंने कहा–अब शराब भी छुट गई और तू जिन्दा भी रख दिया।

मेरा प्रसंग चला था गली पर। यह कबीर साहब की वाणी है और वे कहते हैं कि गली तो चारों बंद पड़ी हैं। हरि से मिलन कैसे हो? उन चारों गलियों को खोलने का एक ही रास्ता है। वह रास्ता पूर्ण सतगुरु का है। पूर्ण पुरुष की शरण लेकर। क्यों? क्योंकि वह निस्वार्थ काम करता है? उसकी सब से बड़ी पहचान तो यही बता दी है। मैंने पहचान नहीं बताई है। मुझे तो पता नहीं था। यह तो हजूर बताते हैं। गांव और देश में भी जो निस्वार्थ सेवा करता है तो वह आगे से आगे बनकर आता रहेगा। सब उसकी इज्जत करते हैं। अगर नहीं बनता है तो देख लो। जब संत में स्वार्थ आ जाता है तो वह भी गिर जाता है। बड़े आदमी जितने भी हैं वे स्वार्थ के आते ही सब गिर जाते हैं। जब तक निस्वार्थ काम करता है उसमें खुदा की बड़ी भारी ताकत आ जाती है कि वह कभी घबराता नहीं है। कहते हैं कि धर्म ध्वजा कभी धसकती नहीं है। वह तो लहलहाती ही रहती है। इसीलिए चारों गली खोलने के लिए एक ही निशाना है। अगर तुम खोल सकते हो तो और कोई रास्ता व निशाना नहीं है। आपने क्या कहा है कि रोकने वाले तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ही हैं। वे कब हटेंगे? अगर कोई कहे कि काम को मारो। ये तो गलत बातें हैं।

काम-काम सब कहें, काम न चिन्हा कोय।
जेती मन की कल्पना काम कहावे सोय।।

काम को मारना नहीं है। काम को तो बदलना है। क्रोध को मारना नहीं है इसे तो बदलना है। लोभ, मोह और अहंकार को मारना नहीं है। इनको बदलना है। आप कहोगे–बदलेंगे किस तरह? यही बात आप समझ लो। इनको बदलने की कोशिश तो हर कोई करता है पर जब तक एक रास्ता नहीं मिलेगा तब तक

उसका बाप भी नहीं बदल सकता है, इन पांचों को। इनको मैं बदल कर बताऊंगा। आप लोगों को बताता हूं वह कौन सा रास्ता है।

सबसे पहले तो काम है। तुम काम दूसरी चीज को कहते हो। तुम्हारा जो काम था उसको तो भूले बैठे हो, जितने भी सत्संगी हो। तुम्हारा क्या काम था? हमारा काम तो सतगुरु की तलाश करना था। उस काम को तो भूल गए और दूसरा ही काम बना लिया है। सतगुरु नाम किसका होता है? काफी लोग तो सतगुरु को ही नहीं समझते हैं। सतगुरु उसी का नाम है जो पूर्ण पुरुष हो। नाम किसे कहते हैं? नाम उसे कहते हैं जो सारी दुनिया की जान हो। सारी दुनिया की जान एक ही चीज शब्द में है, वह है राधास्वामी। यह हमारा मूल मंत्र है। यह हमारा निज नाम है। पर हमारा काम तो सतगुरु की तलाश करना था। फिर क्रोध किस पर करना है? जब हमने सतगुरु की शरण ले ली और फिर भी हमारा मन डोला फिरता है, गंगा गया गंगादास, जमना गया जमना दास। कहीं गया वहीं का रूप बना लेता है। सो क्रोध तो हमने इसी मन पर ही करना होता है। इसको ही कहना चाहिए कि अरे, सत्यानाशी! तू हमारा काला मुंह क्यों करता है? यह तुम्हें पता है कि–

नानक मन जीता तो जुग जीता।

कबीर साहब जी कहते हैं–

कबीर मन मानिया, मन मानियां तो हरि जानियां।

अब क्रोध तो इसी पर करना है। इस पर तो क्रोध करते नहीं हो। अपने शरीर पर करते हो कि आज खाना नहीं खाना है। आज यह नहीं करना है। सो बाम्बी को कूटने से तो सांप नहीं मर सकता। लकीर पीटने से सांप नहीं मरेगा। कोई मौन करता है। कोई जप करता है। कोई होम–यज्ञ करता है। कोई पूजा–पाठ करता है। इनसे तो मन और भी मोटा हो जाता है। मन और भी भारी हो जाता है। आप कहोगे–यह किस तरह? आपने सुना होगा

कि इससे मन अहंकारी बन जाता है कि मैंने इतने तीर्थ कर लिए हैं। मैंने इतने व्रत किए हैं। मैंने इतने यज्ञ कर लिए। अगर इनसे ही मन तिरता तो मैं बहुतों की मिशाल दिया करता हूं। ये क्यों नहीं तिरे? सो मन को मारना नहीं है। क्रोध इसी पर करना है कि अरे हरामी ! तू कुछ तो बदल जा। सो काम तो हमारा है सतगुरु की तलाश करना। क्रोध मन पर करना है। क्रोध करके इसको सीधे रास्ते पर लाना है। जब मन सीधे रास्ते पर आ जाता है तो यह अपनी चाल को छोड़ देता है। जैसे अड़ियल घोड़ा। जब उस पर फेरा चढ़ लेता है तो उसकी रानों के नीचे आते ही वह उसको कहीं से भी निकाल सकता है। वह अड़ेगा नहीं। सो यह मन तो अड़ियल घोड़ा है। जब संत सतगुरु की शरण में चले गए तो आप ही आप यह मन बदल जाएगा। ये कब बदलेगा? यह तभी बदलेगा जब सतगुरु की शरण में चले जाओगे। क्योंकि जो तुम्हारा काम था वह बन गया और तुमको सतगुरु की शरण मिल गई। पर शरण किसको कहते हैं? तुम तो नाम लेते हो। तुम शरण नहीं लेते हो। सोचो मैं क्या कहता हूं। तुम नाम लेते हो। दस हजार ने नाम ले लिया। बीस हजार ने ले लिया। क्या बात हुई? नाम लेते हो। शरण तो गुरुमुख होगा वही लेगा और गुरुमुख ही शरण ले सकता है। गुरुमुख चाहे सो कर सकता है–

गुरुमुख की गति है बड़ी भारी।
गुरुमुख कोटिन जीव उबारी।।

आज हमारे बड़े–2 आदमी क्यों बर्बाद हो रहे हैं? इन्होंने संतों की शरण नहीं ली। हमारे देश का भट्टा बैठ रहा है क्योंकि बड़े–2 आदमी संतों की शरण नहीं ले रहे हैं। जिन्होंने शरण ले ली उन्होंने अपने मन को बदल लिया। इसका नाम शरण लेना है। नाम तो बहुत लेते हैं। नाम लेना बड़ी बात नहीं है। सबसे बड़ी बात, बड़ा काम तो शरण लेना है। शरण किसने ली है? शरण तो

महाराज राय सालिगराम जी ने ली। वे सब कुछ भूल गये। धर्मदास जी ने कबीर साहब की शरण ली थी। सब ही कुछ भूल गया था। अंगद साहब ने, मीरा बाई ने शरण ली थी। वे सब कुछ भूल गए थे। मीरा बाई ने शरण लेकर जाति–पांति को ठोकर मारी। शरण तो कोई भागी ही लेता है। क्या कहते हो? मैंने भी पूरी शरण नहीं ली थी। आप लोग मुझे गुरुमुख कहते होंगे। नहीं। मैंने पूरी शरण नहीं ली। अगर मैं पूरी शरण ले लेता फिर तो कहना ही क्या था? मैंने तो थोड़ी सी ही शरण ली थी। उस थोड़ी सी ही शरण का फायदा मिल गया है। आप लोग इज्जत करते हो। आप लोगों की मेहरबानी है। तो मेरा प्रसंग चला हुआ था कि चारों गली बंद पड़ी हैं हरि से मिलन कैसे हो? इन गलियों को रोकने वाले काम पर। काम को मारना नहीं है। कहीं हीजड़े बनकर बैठ जाओ। काम को तो याद करना है। तुम्हारा काम क्या है?

आए थे किस काम को, कर बैठे के बात।
के मुख ले मिलिए राम से, खाली दोनों हाथ।।

हमने तो अपनी ऐसी गति कर ली कि जिस काम हम आये थे काम को भूल ही गए हैं। हमारा काम था सतगुरु की शरण लेना और जब यह काम पूरा हो गया तो क्रोध करना था। क्रोध मन पर करना था। जब सतगुरु की शरण ले ली, फिर भी ये मन डांवाडोल होता है और मारा–मारा फिरता है। इसको लानत दो कि ऐ मन ! तुझे लानत है। यह तो आपने सुना है–

कबीर मन एक है भौं जगह लगा।
भौं हर की भक्ति कर, भौं विषय कमा।।

जब सतगुरु की शरण ले ली है, तब यह हर की भक्ति कर लेता है। उसकी शरण में चले गए तो बेड़ा पार हो जाता है। सो इस तरह से इन मन के विचार बदलने पड़ते हैं। क्रोध मन पर करना है और इस मन को बदलने की कोशिश करो। यह दोहा

कई बार कहा करते हैं–

पहले ये मन काग था करता जीवन घात।
अब ये हंसा भया, चुग-चुग मोती खात।।

ये मन बदल जाता है। सो इसको मारना नहीं इसको बदलना पड़ता है। सो इस पर क्रोध करके बदलो, फिर जब यह काबू में आ जाता है उस वक्त लोभ करो। लोभ तुम किस चीज का करते हो? हम खेती का, गाय–भैंस का, धन इकट्ठा करने का लोभ करते हैं। हम मिट्टी को इकट्ठा करते हैं। धन को तो हम भूले बैठे हैं। हम लोभ को भूल गए। हमने तो लोभ यही रखा कि जमीन खरीदो, कमरे बनाओ, मकान और बड़े–2 डेरे बनाओ। यह असली लोभ नहीं है। यह तो हमारा मकड़ी वाला जाल है। इस जाल में से निकलना बड़ा मुश्किल है। आपने सुना है–

लग रही आफता, नहीं धापता। म ग की गेल हो रहा चीता।।
कहे चिम्मन अन्त में, जा गा रीते का रीता।।

सो लोभ की बातें बताता हूं। लोभ तो जो सतगुरु ने नाम बताया है (जो काम बताया है) उसका करना है। नाम भी जिस मंजिल का होगा तुम्हें वहीं ले जाएगा। अगर नाम तुम्हारा सोहं का या सतलोक से नीचे का होगा तो कभी भी आगे नहीं जा सकते हो। मैं विद्वान नहीं हूं। मैं अपना तजुर्बा बताता हूं। जहां तक आपका नाम होगा वहीं तक वह ले जाएगा। आगे उसका बाप भी नहीं ले जा सकता है। आप पूछोगे–क्या आपके पास प्रमाण है? मेरे पास तो ऐसे ही प्रमाण हैं। किसी के बाप के पास एक किल्ला जमीन है तो वह तो उसके नाम वही एक किल्ला ही करवायेगा। वह 17 किल्ले तो नाम नहीं करवा सकता है। सो जब तुम सोहं का जाप करते हो तो उसी के देश तक पहुंचोगे। सोहं देश में रह जाओगे। रारं का जाप करोगे तो काल में रह जाओगे। जोत निरंजन का जाप करोगे तो काल में रहोगे। नीचे के जापों का तो

तुम्हें पता ही है। जो अकाल पुरुष है उसकी धुनि का तुम्हें पता नहीं है तो फिर जाओगे कहां? उसकी मंजिल और धुनि का पता नहीं है तो कहां जाओगे? सो तुम लोग किस का जाप करोगे? अगर किसी वर्णात्मक नाम का ही जाप किया तो तीन लोक में टक्कर मारते रहोगे। मैं सत्संग करवाता हूं। मेरा सत्संग ही सत्संग है। अगर नीचे के नाम जपते रहे तो तीन लोक में ही टक्कर मारते रहोगे। कभी अपने घर नहीं पहुंचोगे। इसलिये लोभ सतगुरु के बताए हुए नाम का करो। उसका जाप करो। वह जाप कब करोगे? पहले काम करना है। सतगुरु की शरण लेनी है। दूसरे मन के ऊपर चढ़ना, उसको बुरे कामों से हटाना जब ये दोनों सफलताएं मिल गई तो फिर नाम की कमाई का लोभ करना। वह नाम की कमाई तुम्हें खण्डों, ब्रह्मंडों में ले जाएगी। अब काम, क्रोध और लोभ करो। फिर मोह किसका करोगे? बेटे–पोते, धी–जंवाइयों का मोह तो हमें वापिस ले आएगा। आपने यह तो सुना है–

जहां आसा वहीं बासा।

फिर संतों ने सतगुरु, स्वरूप का ध्यान क्यों बताया है? उस पूर्ण–पुरुष का ध्यान बताया है। इसीलिए कि जिस किसी की आश होगी उसी के पास जाना पड़ेगा। यदि तुम्हारी आश बेटे–पोतों, धी–जंवाइयों में होगी तो वापिस आ जाओगे। सहजोबाई ने कहा है कि जिसकी वासना बेटों में है वह सूअर बन कर आएगा। स्त्री में वासना है तो चूहड़े का कुत्ता बनकर आएगा। धन में आस होगी तो सांप बनकर आएगा। ये मैं तुम्हारे शास्त्रों की सुनी हुई बातें कहता हूं। अगर यह झूठ है तो कहने वाले ही झूठे होंगे।

तो फिर मोह तुम किसका करोगे? सभी चीजें फनां होने वाली हैं। गरीबदास ने भी बड़ी ऊंची बातें कही है–

द ष्टि पड़ा सब फना है, धरणी अंबर कैलाश।
क त्रिम बाजी झूठ है, सुरत समाओ सांस।।

जो कुछ भी द ष्टि में आता है सब कुछ ही फनां होने वाला है। फिर किस का मोह करोगे? सो उस नूरी गुरु का मोह करना है। अगर तुम्हारी पहली चीज ठीक बन गई तो फिर उस सतगुरु स्वरूप का मोह करो। वह सतगुरु तुम्हारे अन्दर बैठा हुआ है। उसी को हम नूरी गुरु कहते हैं। उस सतगुरु स्वरूप का जब अंतर में प्रकाश होगा उसका फिर ऐसा मोह हो जाएगा कि तुम छोड़ ही नहीं सकोगे। पर मैं यह भी बताता हूं कि जिसका बाहर के गुरु से प्यार नहीं है तो वह अंतर के गुरु से भी प्यार नहीं कर सकता। सोचो ! मैंने क्या बात कही है? क्या इस बात पर कोई प्रश्न करने वाला है? जिसका बाहर के गुरु से प्यार नहीं है उसका अंतर के गुरु से प्यार नहीं होगा। अन्तर के प्यार के बारें में भी बता देता हूं कि जो पूर्ण पुरुष है उससे ही प्यार करोगे तभी पूर्ण जगह पर पहुंचोगे और अगर वही पूर्ण नहीं है तो तुम भी अधूरी ही जगह में रह जाओगे। पूर्ण की निशानी भी क्या है? पूर्ण उसको कहते हैं जो तरतीब वार शब्द को बता कर अठारहवीं मंजिल का निशाना बंधा दे। यह पूर्ण पुरुष की बात बताई है। किताबें देख कर पढ़ कर लिखकर तो पता नहीं कितने सतगुरु बन जाते हैं। पर जब आग लगती है तब वे घबरा जाते हैं। आगे जवाब नहीं आ सकता है। इसीलिए–

पढ़ना गुणना चातरी, ये गुड़ियों का खेल।
जब मिली सच्चे पीव से देई ताक में मेहल।।

अब ये मोह की बातें मैंने बताई हैं कि किस से मोह करना है। सतगुरु से करना है। पर किस सतगुरु से करना है। बाहर के सतगुरु से प्यार होगा तो उस नूरी गुरु से अपने आप ही मोह हो जाएगा। फिर तुम पलक उघाड़ कर नहीं देखोगे। तुम हर वक्त ही उस नूरी गुरु के दर्शन करते रहोगे। फिर तुम उस की तरफ कैसे देखोगे? तुम जब एक सूरज की तरफ नहीं देख सकते हो। वहां तो

करोड़ो सूरजों का प्रकाश है। संतों की साख मिलती है–

सो चंदा उगमिया, सूरज कई करोड़।
एता चांदन होंदिया गुरु बिन घोर अंधियार।।

कब होगा? गुरु बिन घोर अंधियार। जो काम था वह काम तुमने नहीं किया। जब काम कर लोगे तो चांदणा अपने आप ही हो जाएगा। काम तो सतगुरु की खोज का है। जीव का काम तो यही है। जब वह सतगुरु मिल जाता है तो लेखा निमड़ जाता है। पूर्ण गुरु के जब अंतर में दर्शन हो गए तो प्रकाश हो गया और हमारा दिन प्रतिदिन मोह बढ़ता चला जाएगा। यह संसारी मोह तो हमें नर्कों में ले जाता है। यह मोह हमें कब्र में धक्के देता है। लेकिन वह मोह तुम्हें राधास्वामी धाम में ले जाएगा। सतखण्ड में ले जाएगा। ये है मोह। काम, क्रोध, लोभ और मोह बता दिए हैं। जब ऐसा मोह हो जाता है कि अटल सतगुरु तुम्हें खड़ा दिखता है और शब्द और प्रकाश भी खुल गया है फिर तुम अहंकार कौन सा करोगे? फिर तो तुम्हें यही एक अहंकार करोगे–

पा गया जी पा गया मेरा प्रीतम प्यारा पा गया।
क्या करेगा वह आगे झिलमिल जोत दिखा गया।।

आपने महात्माओं की यह वाणी सुनी होगी।

पाग्या जी पाग्या मेरा प्रीतम प्यारा पा गया।
क्या पाग्या कि झिलमिल जोत दिखा गया।।

सो इन पांचों चीजों को मारना नहीं है। इनको बदलना है। सो कबीर साहब का मुझे पता नहीं है उनका क्या ध्येय था? मैंने तो अपनी बातें बताई हैं अपने विचार के अनुसार ही। कबीर साहब होते तो उनसे पूछ भी सकते थे। अब इन्होंने गा दिया है और मैंने अपना विचार बता दिया है। पर मैंने पांचों चीजें बता दी हैं कि असलियत तो यह है। इन पांचों चीजों को इस तरह कर लोगे तो तुम अपनी गलियों को खोल लोगे। पर ये गलियां कब खुलेंगी?

मैंने यह बात पहले ही बता दी है–

एक साधे सब सधैं, सब साधे सब जाहिं।
कहे कबीर अब सोच समझ मन माहिं।।

यह कबीर साहब कहते हैं। तुलसी साहब कहते हैं–

बने तो गुरु से बने, ना बिगड़े भरपूर।
तुलसी बनें जो और से, उस बनने पर धूर।।

सतगुरु से क्या बनेगा? सतगुरु के पास भी नहीं बैठे। सतगुरु की तो बात भी नहीं सुनीं। उसने स्पर्श नहीं किया। हम उनसे बतलाए और बोले नहीं तो फिर कैसे क्या होगा? मेरी तो मिशाल ही ऐसी–ऐसी हैं। समझ लो कि तुम्हें सतगुरु ही नहीं मिला है। सतगुरु तभी मिलता है जब वह स्पर्श भी करता है। हम उनसे बात करते हैं और उनके पास बैठते भी हैं। हमारे भ्रम दूर करते हैं। सभी चीजें दूर हो जाती हैं। सो–

सतगुरु मिले म्हारे सारे दुख बिसरे।

इसलिए अगर हमारा सतगुरु पर पूर्ण विश्वास है तो सतगुरु उसका फैसला आप ही कर देगा। वे पांचो के पांचों आप ही हट जाएंगे। गली को खोलने के लिए तो जमींदार के पास जेली होती है। हाथ से खोलते हो तो हाथ को कांटे लग जाएंगे। इसी प्रकार से सत्संगी के पास भी सतगुरु रूपी जेली होती है। सतगुरु एक जेली का काम करता है। इसी छड़ी से जमींदार सांप को भी मारता है। बोझा भी उठा ले जाएगा। इससे आधा जोर पड़ेगा। अगर तुम सतगुरु को आगे करके चलोगे तो आधा जोर लगेगा। देहधारी का प्यार होना चाहिए। अंतर में भी प्यार प्रगट हो जाएगा। प्यार करने की बाहर की मिसाल मुझे याद आ जाती है। हमने सतगुरु से प्यार कर लिया। पर सतगुरु को तजुर्बा है नहीं पहले स्थान तक का भी। तो फिर तुम कहां जाओगे? इसीलिए तो कहा जाता है–

सतगुरु खोजो हे प्यारी, जग में दुर्लभ रत्न यही।

मैंने आप लोगों को आसन के बारे में बातें बताई थी कि यह आसन योगियों और ऋषि–मुनियों का था। यह आसन संतों का नहीं था। जो आसन संतों का है वह ऐसा है जैसे बच्चा गर्भ में रहता है। अगर दूसरा आसन होता है तो बच्चा भी गिर जाता है। सो संतों का मार्ग करणी का मार्ग है और यह काम इसी जिन्दगी में करना है। संतों का आसन भी ऐसा ही है। जब इस आसन का अभ्यास नहीं करते हो तो कभी भी रास्ता नहीं खोल सकते हो। न कभी खुला है और न खोल सकते हैं। क्योंकि मैंने बहुत से महात्माओं के वचन सुने हैं। अगर तुम पूछो कि क्या वेदांत में भी ऐसा है। हां, तुम्हारे ऋषियों ने भी लिखा है। छोटी उम्र थी। मैंने शिवपुराण सुना था। उसमें शिव जी पार्वती जी से कहते हैं कि सुबह उठो और ये दरवाजे बंद करो। नानक साहब ने भी यही कहा है–

तीनों बंद लगाय के सुनो अनहद टंकोर।
नानक सुन्न समाध में नहीं सांझ नहीं भोर।।

वही फारसी में भी कहते हैं–

चश्म बंद, गोश बंद, लव बंद। गरमीना रूर हक।।

अर्थात् यदि प्रकाश और शब्द नहीं खुलता है तो मैं उलहाने में हूं। सभी ने ये बातें कही हैं। ये कब होती हैं? यही बातें तो संतों ने बताई हैं। ये तीनों बंद इस आसन के बिना नहीं लग सकते हैं। अगर किसी को कुछ तकलीफ है तो साधनी भी रख लेते हैं या तकिया रख लेते हैं। सो प्रसंग चला हुआ था–

मेरा हर से मिलन कैसे हो, गली तो चारों बंद पड़ी।

उस परमात्मा से कैसे मिलूं। इन चारों गलियों को खोलने का मार्ग तो यही है। एक ही जेली है, वह सतगुरु का सहारा ही एक साधन है। उस सतगुरु के सहारे से चारों गली एक दम खुल

जाती हैं। वे गली भी कौन सी हैं। आगे बता दिया है–

भक्ति ज्ञान वैराग योग का, मार्ग दिया बताय।

यही चार गली हैं। तुम्हारी भागवत में भी आती हैं यह कौन है? मैं भक्ति हूं। यह कौन है, यह ज्ञान और यह वैराग्य है। एक योग है। पर संतों का मार्ग तो इनसे आगे है। ये बातें सुनकर आप भी चकरा जाओगे। संतों का मार्ग इनसे आगे और निराला है। इसीलिए यह करणी का मार्ग है। बातों का नहीं।

करणी करे सो पावे अवधू, करणी करे सो पावै।
बिना करणी के दर दर के धक्के खावै।।

जिस सतगुरु ने करणी नहीं की उससे तुम क्या लोगे? इसलिये संत सतगुरु तो जीवों को लेने के लिए आते हैं। वे दुनिया में अपनी धाक जमाने के लिए नहीं आते हैं। मैं तो न सतगुरु हूं और न कोई संत हूं। मैं तो अपने सतगुरु की ड्यूटी बजाता हूं। मैं सत्संग में ज्यादा आदमियों के आने में भी खुश नहीं हू। मुझे कम और ज्यादा आने का कोई गम नहीं है। मुझे अहंकारी मत समझना। मैं तो अपनी गर्ज के लिए ही महात्माओं के पास जाया करता था। मेरी गर्ज के लिए तो कोई आता नहीं है। बेशक कोई आओ न आओ। मैं सतगुरु की ड्यूटी बजाता हूं। जैसी बजेगी वैसी बजा दूंगा। न मुझे कम का शौक है, न ज्यादा का। अपना काम करना है। सो ही मैंने आपको यह एक कड़ी का इशारा बताया है कि चारों गली बंद पड़ी हैं। इन गलियों के बंद करने वाले हैं उनको बदल दो। उनको मारो मत। मारना तो जुल्म है। जिन्होंने मारे हैं वे तो कुछ भी काम नहीं करके गये। जिन्होंने मारे उन्होंने कुछ भी नहीं किया। उन्होंने अपना शरीर खो लिया। अपना जीवन बिगाड़ लिया। इनको मारो मत, बदल दो। बस, इनसे तुम्हारी चारों गली खुल जाएंगी। आगे कहते हैं–

पांच पच्चीस पहरवा ठाड़े, रोक लिए सब ठाम।

उनको तो रोक लिया पर उनके साथ में ये भी रोक लेते हैं। वे पांचों तो तुम्हारे हट गए। ये तो सतगुरु ने हटा दिए। तुम्हारे काम ने इनको हटा दिया। उस काम ने इनको हटाया जिस काम को तुम भूले बैठे थे? तुम तो संसारी काम में फंस गए। अब जो काम है उसको याद करोगे तो जीवित रह जाओगे। काम तो सतगुरु खोजने का था। जब सतगुरु को खोज लिया तो सभी एक तरफ हट गए। फिर इन पांच के साथ पच्चीस प्रक तियों ने सारे स्थान घेर लिए। फिर आगे कैसे जाओगे? जब वे पांचों काबू में आ गए तो वे तो एक से सभी सध गए। जब सतगुरु से हमारी लग्न लग गई तो सारे ही काबू में आ गए। फिर ये 25 प्रक तियां भी उनके साथ ही काबू में आ गईं। ये कुछ भी नहीं कर सकती हैं। खाट का एक पाया पकड़ कर खींच लो बाकी तीनों साथ ही आ जाएंगे। जब वह काबू में आ जाता है तो सभी काबू में आ जाते हैं। ये पांच, पच्चीस कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं। वैसे तुम देखते हो कि अपने–अपने स्थान तो सभी ने रोक रखे हैं। हमारा एक बाल भी शेष नहीं है। सारे स्थान रूके बैठे हैं। एक उसके बिना ही ये रूके बैठे हैं। जब वह एक हमारे हाथ में आ जाता है तो सभी स्थान खुल जाते हैं। भाखड़ा बांध पर जब एक बटन दबता है, तो हर जगह बिजली चालू हो जाती है। जब वही बटन दूसरे हिसाब से दबाते हैं तो हर जगह वह बिजली बंद हो जाती है। सो वह एक बटन हमारे अंदर में कौन सा है? वह एक सतगुरु है। सतगुरु मिल गया तो बिजली जल गई और जब सतगुरु नहीं मिलता है तो अंधेरे में पड़े हैं। अंधेरा कौन सा है? अंधेरा काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार का है। कोई किसी अंधेरे में है और कोई किसी अंधेरे में हैं। फिर 25 प्रक तियां भी हैं। ये प्रक तियां तो पांचों तत्वों के ही साथ हैं।

बल करना और ध्यावना, उठना और संकोच।
देव बड़ी जानिए वायु तत्व सोच।

इसी तरह–

हाड़-मांस से नाड़ी त्वचा जान ये पथ्वी तत्व पहचान।

इस तरह एक–एक तत्व के साथ पांच–पांच प्रकति हैं। कितना पूछोगे और क्यों इस चक्कर में पड़ते हो? एक के साधने से सभी सध जाते हैं। ये सभी प्रकतियां भी ढीली पड़ जाती हैं। जब पाली काबू में आ जाता है तो पशु तो अपने आप ही पकड़े जाते हैं। सो पाली हमारा मन है। मन सतगुरु की दया से ही काबू में आता है। जैसे हाथी को एक अंकुश से काबू में कर लेता है। फिर कोई प्रश्न भी कर सकता है कि महाराज जी ! हम तो, इसे समझे नहीं हैं। क्योंकि मन तो बड़ा भारी जुल्मी है। यह तो ठीक है। इसे छोटा तो कोई भी नहीं कहता है। ये सारा खेल ही मन का है। ये सारा काम ही मन का है। संतों ने तो ये कहा है–

साधो मन है बड़ा जालिम।
जिसका पड़ा वास्ता उसी को है मालुम।।

इस मन ने पारासर की ऐसी तैसी कर दी। श्रंगी की भंगी बना दी। दुनिया कहती है कि नारद तो बड़ा भक्त था। वह ब्रह्मा का पुत्र था। उसका बन्दर का मुंह बना दिया और भी तुमने बातें सुनी होंगी। लम्बी बातें क्यों कहलवाओ? इस मन ने तो सभी को नचा दिया। गहस्थी लोग तो बेचारे नाचे पड़े हैं। अगर कोई बच सकता है तो एक सतगुरु की शरण से ही बच सकता है। जैसे कीले के पास चक्की में अनाज के दाने बच जाते हैं। इसी तरह से अगर कोई बचता है तो उसकी ही शरण से बचता है। शरण कोई भागी ही लेता है। नाम तो सारा देश लेता है। नाम तो लाखों ने ले रखा है। पर शरण तो कोई भागी ही लेता है।

सो सत्संगियो! मैंने शरण की बातें कीं और शरण जिसने ले

ली उसका बेड़ा पार हो गया। उसकी एक सौ एक पीढ़ियां तिर जाती हैं। मुझे तो आज तक शरण लेने वाला नहीं मिला है। बताओ ! अब क्या कहोगे? मेरे गुरु महाराज के पांच सौ हजार सत्संगी थे। उनमें से कह भी देते हैं कि मैंने शरण ली। क्या शरण ली? मेरी तो केवल यही एक शरण थी। जब वे उदास दिखते थे तो मैं कहता था कि क्या बात है जी? आप उदास हो। वे कहते कि फलां बात है। मेरी जहां तक भी पार पड़ती थी, मैं उनकी उदासी को दूर करने की कोशिश करता था। यही शरण थी। कई–कई बार वे ऐसी बातें कह देते थे पर मैंने उनकी शरण ले रखी थी कि मेरा संसार में कोई था ही नहीं। मैंने नाम नहीं लिया। शरण ली थी। शरण लो। शरण लेने वाले को कभी दुख भी नहीं होता है। मैं पैदा हुआ उसी वक्त से विरोधी लोग कितनी बर्बादी और बुराइयां करते रहे। अगर मैं शरण नहीं लेता तो मैं गिर जाता। बहक जाता।

सो आप लोग भी शरण ले लोगे तो पता लग जाएगा कि चाहे कुछ भी हो फिर कोई घबराहट नहीं होगी। उसका काम आप ही आप बन जाता है। जब तक तुम शरण नहीं लेते तब तक काम बिगड़ता रहता है। जब प्रहलाद ने शरण ली थी तो उसका काम नहीं बिगड़ा। शरण सहजोबाई और मीराबाई ने ली थी। शरण तो माता सीता ने लंका में जाकर भी ली थी। राम ने वहां भी उसकी मदद की। मेरी मदद भी उस राम ने की। मैं आपको बताऊं कि मेरे साथ एक ऐसा झमेला पड़ा। मेरे विरूद्ध 10 दिन तक आर्य समाजियों ने बड़ा भारी उपद्रव मचाया। इतना भारी कि उसे तो मैं ही जानता हूं। मेरा गांव में कोई भी वाली वारिस नहीं था। मैं यह सोच कर आया कि मैं कल ही गांव से निकल जाऊंगा। मेरे पास गाय, बच्छे और पशु भी थे। पर मैंने सोचा कि इन सब को छोड़ चल। यहां क्या करेगा? मैं घास का भार लेकर आया, इस

बोझ को तो डाल दिया। नहाया और नहा कर मैंने रामायण को देखा। मैंने रामायण खोली। थोड़े–थोड़े अक्षर जोड़ने आते थे। अचानक ही वह प्रकरण निकल आया जहां सीता वाटिका में बैठी हुई थी। मालिक उसको सहारा अपने आप ही दे देता है जो कोई उसकी शरण लेता है। मेरी जो भी बुराईयां चली उनसे बहुत सी माताएं बहुत दुख पाई। उनकी हाय पड़ी। उनकी हाय बुराइयां करने वालों को खा जाएंगी। सो मैं अपनी हालत बताता हूं।

मैंने रामायण को देखा। सीता माता वाटिका में बैठी है। रावण की कैद में है। रावण उसे धमकाता है कि तू मुझे पति मंजूर कर ले नहीं तो तू तलवार देख ले। इससे तुझे मैं कत्ल कर दूंगा। तेरा यहां कौन है? तेरा तो कोई भी नहीं है। वे बनवासी तो कहीं भटक कर मर गए होंगे। माता सीता कहती है–ओ दुष्ट, रावण ! तू क्या सोचता है? यहां मेरा राम आएगा और मुझे आजाद करवाएगा। तेरा नाश करेगा। मेरा रखवाला राम है।

ऐ सत्संगियो ! इस बात ने मुझे जिन्दा कर दिया। मेरे दिल में एकदम यह बात आई–क्या तेरा राम कहीं गांव गया है? या उसको तूने कहीं गिरवी रख दिया है? राम तो तेरा भी है, पगला। तू गांव छोड़कर भाग रहा है। तू भी राम का है और राम भी तेरा है। सतगुरु स्वरूप का ख्याल आया। मैं तो घबराया ही नहीं। सभी कुछ बन गया। वे सब ही ढीले पड़ गए। उन्होंने ही गर्डर चढ़ा दी (कमरे बनवाए)। यह काम मेरी शरण ने किया।

शरणागत की लाज अब तो निभाए सरेगा।

तुम शरण में पड़ जाओ। तुम देवी–देवताओं की शरण में पड़ते हो। तुम गूगा पीर की शरण में पड़ते हो। हनुमान की शरण में पड़ते हो। तुम राम और लक्ष्मण की शरण में पड़ते हो तो क्या मौजूदा संत सतगुरु कुछ भी नहीं कर सकता है? अगर तुम शरण पड़ जाते हो तो। पर मैं सतगुरु की बातें कहता हूं। सतगुरु कहते

किसको हैं? जो सतलोक से नीचे है उसको सतगुरु नहीं कहा जा सकता है। आप यह प्रश्न कर सकते हो–सतलोक का आप क्या वर्णन करते हो? मैं तो कोई सतगुरु नहीं हूं। मैं तो रखवाला हूं। मेरे गुरु की ड्यूटी बजाता हूं। सतगुरु का जब पता लगेगा तो मेरे साथ कोई बोलेगा ही नहीं। सो आप लोगों को बताया कि–

ये विधना ने कैसी कीन्ही,
गली म्हारा प्रीतम आता बैरी बसाया म्हारे गांव।

वह बैरी कौन बसा दिया? मैं उस बैरी का ही वर्णन कर रहा हूं। इस शरीर में सब से बड़ा बैरी यह मन है। मन बैरी इसीलिए है क्योंकि यह काल का वकील है। सुरत दयाल की अंश है। अब सुरत के साथ उसकी गांठ बंधी हुई है। इस मन की गांठ कैसे खुले? कोई यहां जुलाहा होगा। जैसे खद्दी गांठ लग जाती है वह खुलनी भी मुश्किल हो जाती है। सो ही इसको गांठ खुलना कहते हैं। वह गांठ कहां खुलती है? संत मत में बताते हैं और वेदान्त भी बताता है–

गांठ जुलाहा घुल गई तो खोलनियां कौन?

यह गांठ सुरत और मन की घुल गई है। अब सुरत तो पवित्र थी। मन तो ऐसा ही था काल का वकील। उसके साथ ऐसी गांठ लग गई है कि निकलना मुश्किल हो गया है। हींस की झाड़ियों में अगर रेशमी कपड़ा फंस जाता है तो बड़ा मुश्किल से सुलझता है। इसी तरह सुलझाने वाला चाहिए। इस सुरत को मन से अलहदा करना है और यह सतगुरु की दया से ही हो सकता है। यह मन अलहदा कब होगा? लगातार अभ्यास में बैठा करो। अगर तुम्हें आनन्द नहीं आता है रस नहीं आता है तो भी साधन में दोनों वक्त बैठा करो। तीन या चार बार बैठो। मौका लगते ही बैठो। शनैः–शनैः–

करत करत अभ्यास के मूढ़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात से शील पर करे निशान।।

आपने देखा होगा लड़कियां पानी लेने जाया करती हैं। उनकी रस्सी पत्थर पर निशान कर देती है। जब निशान पड़ जाता है तब उसी रस्सी को उस से कितनी बार बाहर निकालो तो वह वहीं आ जाती है। तुम बार–बार निकालो। वह वहीं फिर आ जाएगी। इसीलिए यह थोड़े दिन का सुमरन है, फिर तुम्हारा वह सुमरन नहीं टूटेगा। वह सुमरन बनता ही रहेगा। हजारों नामों के सुमरन को भुल जाओगे। नाम तो एक ही है। उस नाम का सुमरन करते रहोगे तो वह सुमरन तुम्हें उस मंजिल पर ले जाएगा। जहां का बीजा होगा वहीं जाना होगा। दूसरी जगह कोई नहीं जा सकता है। उसी मंजिल पर वह नाम ले जाएगा। इसीलिए कहा है–

पांच पच्चीस पहरवा ठाड़े, रोक लिए सब ठाम।
ये विधना ने कैसी किन्ही, बैरी बसाया म्हारे गाम।।

इस शरीर में सबसे पहला बैरी कौन है? मैं तो अपने विचार से ही बताता हूं। कबीर का और कोई हो सकता है। मैं तो कहता हूं कि यह बैरी तो मन ही है। इस को तुम किस तरह ठीक करोगे? जैसा अन्न खाओगे, मन तो वैसा ही हो जाएगा। किसी गांव का एक आदमी मेरे पास आया। दिवान नाम था। बहुत अभ्यासी था। वह आकर बोला–मेरा अभ्यास नहीं बनता है। गड़बड़ हो गई। मैंने कहा–क्या बात हुई दिवान ! तेरा तो बड़ा अभ्यास था। हम तो घमण्ड करा करते कि दिवान बड़ा अभ्यासी है। उसने कहा–मैं तो गिर गया हूं जी। मुझे पता नहीं क्या होगा? मेरा भजन नहीं बनता है। मैंने देखा और कहा कि तूने तो कोई गलती की है। उसने कहा कि नहीं जी। मैंने कहा–यह तो मैं नहीं मान सकता हूं। तूने किसी की चीज खाई है। यह गलती नहीं की है तो तू किसी की हराम की चीज खा गया है। उसने कहा–खाई है जी। मेरे घर में एक पंजाबी ने दुकान कर रखी है। मैं उसके 5–7 टमाटर लाया था।

उसके पैसे नहीं दिए हैं। वे मैंने खाए हैं। मैंने कहा–उसको जाकर पैसे दे देना। भजन बन जाएगा।

सोचो ! मैं क्या कहता हूं? जो सत्संगी होकर चेलों का धन खाते हैं, जो सत्संगी होकर ऐसे करते हैं, फिर वे भजन क्या करेंगे? भजन नहीं बनेगा। अगर भजन करना है तो–

मनसा, वाचा कर्मणा दुख काहू मत देय।
ऐती रहणी जो रहे, सो ही शब्द रस लेय।।

इसीलिए तो संतों का हृदय सफेद होता है। एक दिन भी अगर वह गलती कर लेगा तो उसी दिन प्रकाश बन्द हो जाएगा। सफेद कपड़े पर अगर एक छींट लग जाएगी तो उस से सभी को घ णा हो जाएगी कि तुझे खून का छींटा लगा हुआ है। पर काले कपड़े पर अगर यह छींटा लग जाता है तो वह दिखाई नहीं देगा। अगर लाल पर लग जाएगा तो भी दिखाई नहीं देगा। सफेद पर वह दिखाई दे जाएगा। सो संतों का मार्ग ही ऐसा है। वे इसी जीवन में सारे कर्म काट जाते हैं। आप कहोगे–कैसे? जब तुम्हें अभ्सास में रस नहीं आता है, प्रकाश नहीं दिखाई देता है और शांति नहीं मिलती है तो सोचो कि कोई गलत काम कर लिया है। उस दिन क्या करोगे? उस दिन, अगर पहले एक घंटा बैठते हो तो अब दो–तीन घंटे बैठो। जितनी भी देर सुमरन होगा, सुमरन से सारा मैल निकल जाएगा और शांति आ जाएगी। जैसे कपड़ा मैला है। साबुन लगाने और धोने से मैल निकल जाएगा। सफेदी आ जाएगी। इसी तरह से हमारी आत्मा में सफेदी आ जाएगी। घटिया काम करने से वह मैल चढ़ गया है। वह सुमरन का रगड़ा लगते ही उतर जाएगा। जब वह उतर जाएगा तो वह कपड़ा चमक उठेगा। फिर कभी उस पर मैल न चढ़ने दो। इसीलिये कहता हूं कि नाम लेना तो मामूली बात है। नाम तो हर कोई लिए हुए है।

पर शरण में जाना बड़ा कठिन काम है। जो शरण में चला जाता है उसे किसी चीज की परवाह नहीं रहती है। उसके सभी काम पूरे हो जाते हैं। अगर काम पूरे नहीं होते हैं तो जिसकी तुम शरण में गए, दोष तो उसी को है। अगर सतगुरु का अपनाया हुआ जीव नर्क में जाता है तो दोष सतगुरु का ही है। सतगुरु को ही नीचा देखना पड़ता है। इसीलिये सतगुरु का अपनाया हुआ जीव नर्क में नहीं जाता है। जब किसी बहन के घर में बच्चे भूखे बैठे हैं तो दोष उसके पति का होगा। जिसका अभ्यास नहीं बनता या जिसको शांति नहीं आती है तो यह सोचो कि दोष तुम्हारे गुरु का ही है। उस से जाकर पूछो। वह तुम्हारी गल्तियां निकाल देगा। वह तुम्हें बता देगा। उसकी बात पर चलोगे तो जीवित हो जाओगे। सो ही कहते हैं कि उस बैरी को हटाने का एक ही रास्ता है कि सुमरन करो। डटकर सुमरन करो। सुमरन इतना करो कि अपने आपको भूल जाओ।

एक दरवाजा सुमरन से खुल जाता है। कभी तुम समझते हो कि ध्यान से ही खुलता है। अभ्यास या शब्द से ही खुलता है। नहीं ! पहली मंजिल तो सुमरन से ही खुलती है। जब सुमरन कच्चा है तो दरवाजा कभी भी नहीं खुलेगा। जैसे किसी के घर पर जाकर तुम उसे जगाना चाहते हो और बाहर ही खड़े रहोगे तो क्या वह जागेगा? नहीं। तुम वहां आवाज करोगे या रूक्के मारोगे तो आखिर वह दरवाजा खोल देगा। इसीलिए हमारा सुमरन उस सतपुरुष को आवाज देना है। इस सुमरन की टंकार से रास्ता खुल जाता है। फिर हम अपने घर चले जाते हैं। जिसका सुमरन कच्चा है, उसका सब कुछ ही कच्चा है। जिसका सुमरन पक्का है उसका सब कुछ पक्का है। वह सुखपूर्वक अपने घर चला जाता है। अपने सुमरन को कभी मत भूलो। उस राधास्वामी नाम को सदा

याद रखो। पर जुबान से याद न करो। मैं तो अपने तजुर्बे ही बताया करता हूं। तुम राधास्वामी नाम का सुमरन करके छठे चक्कर पर जरब लगाओ। देखो फिर क्या होता है? ऐसा 15–20 दिन करके देखो। इस तरह से वह बैरी काबू में आ जाता है। वह बैरी कौन है?

मन मेरा मसखरा, कहूं तो माने रोस।
जिस मार्ग साहेब मिले, ताहि न चाले कोस।।

जिस मार्ग से वह परमात्मा मिलना है उस मार्ग पर तो यह एक पग भी नहीं चलता है। यह मन चार युगों से बिगड़ा हुआ है और इन चारों युगों के 43 लाख और कुछ हजार वर्ष होते होंगे। मैंने किसी से सुनी थी यह बात। इतने युग और इतने सालों से बिगड़ा हुआ मन क्या तुम एक ही दिन में सुधारना चाहते हो? सोचो ! मन अपना काम करता है तो तुम भी अपना किया करो। मन तुम्हें डिगाता है तो तुम अपना काम किया करो। तुम अपने सुमरन को मत छोड़ो। संत कहते हैं–

सुमरन तार टूट न जाई।

सुमरन का तार अगर टूट जाता है तो मर ही जाते हैं। सो अभ्यास करो। वह बैरी हमारे इस शरीर में बसा हुआ है। कबीर साहब का बैरी कौन था? यह मुझे पता नहीं है। मैंने तो यही समझा है कि शरीर में तो सबसे बड़ा बैरी यही मन है। यह मन हमारी मदद भी करता है। पर जब यह छठे चक्कर से नीचे इंद्रियों में उतर आता है तो यह हमारा दुश्मन भी है। आप कहोगे–यह कैसे? तुम मन के कहे रोटी खाते हो। मन के कहे पानी पीते हो। मन के कहे अनुसार ही काम करते हो। मन के कहे ही रिश्ते करते हो। अगर नहीं करते हो तो बोलो? सो जब तुम मन के कहे ही सब कुछ करते हो तो मन तुम्हारा मित्र भी है। तुम भी उसके मित्र बने

हो। तुम्हारा मन तो एक राजा बना बैठा है। जब यह छठे चक्कर से ऊपर चला जाएगा, फिर तुम मन की पीठ पर बैठ जाओगे। वहां जाकर मन तुम्हारी मदद करेगा और यह आगे–आगे होकर चल देगा। यह बदलता चला जाएगा और यह हंस बन जाएगा। सो वह एक बड़ी चीज है। इस मन को बदलने का एक ही उपाय है, सतगुरु की शरण और जब सतगुरु की शरण ले ली तो बाकी कुछ भी नहीं रहता है। पर उसकी शरण लेना बड़ा कठिन है। देखो मैं कितना बेधड़क होकर कह देता हूं कि मुझे तो आज तक शरण लेने वाला नहीं मिला। मुझे नाम लेने वाले तो मिल गए। पर शरण लेने वाला तो कोई भी नहीं है। जो शरण लेता है वह कभी भी प्रश्न नहीं करता है। पत्नी–पति की शरण में चली जाती है तो सभी फिक्र उसके पति को हो जाते हैं। घर का सभी सामान अपने आप लाएगा। मिर्च मसाला लाएगा। कपड़े बनवाने हैं तो वह आप ही बनवाएगा। वह तो एक इशारा ही करती है कि मेरे बच्चों को फलां चीज चाहिए। अगर वह नहीं लाएगा तो वह शरण लेने वाली तो यही कहेगी–सत्यानाशी ! तू तो डूब ही गया। बच्चे तो तेरे नंगे फिरते हैं। फिर बट्टा किसको लगेगा? जिसकी वह शरण लिए हुए है बट्टा उसी को लगेगा। इसी तरह जब तुम शरण ले लोगे और तुम्हारा काम पूरा नहीं होगा तो फिर उसकी तो कोई भी जगह नहीं है। मेरा सतगुरु तो शहनशाह था। मेरे तो सभी काम पूरे हुए। सो बैरी को निकालने के लिए शरण जरूरी है। आगे कहते हैं–

आशा त ष्णा खड़ी दुहेली, इनमें रहा समा।
कनक कामिनी गहरा फंदा अंत तजा नहीं जा।।

यह मन आशा और त ष्णा में समा गया है अगर मन पीछे हट जाएगा तो तुम्हारी ये आशाएं और त ष्णाएं भी बदल जाएंगी। फिर

ये दूसरा ही काम करने लग जाएंगी। फिर मन शील, संतोष और विवेक, विचार जैसे दूसरे ही धंधे करने लग जाएगा। जो तुम आशा करते हो, वह तुम्हारी आशा भी बदल जाएगी। त ष्णा जो करते हो वह तुम्हारी त ष्णा भी राम नाम की हो जाएगी। कहते हो–

चाहना रख एक राम नाम की, सारा धोना धो देगी।
इससे दूजी चाहना, दुनिया जहान से खो देगी।।

सो इन आशाओं और त ष्णाओं की कठिनाइयों में यह समाया हुआ है। **कनक कामिनी गहरा फंदा अंत तजा नहीं जा।** सो ये कनक कामिनी के गहरे फंदे किसने डाल दिए? यह तो वही बात आ गई। यह सारा ही मन का खेल था। ये फंदे मन के ही डाले हुए हैं। इन्हीं सभी फंदों में वह फंसा हुआ है। इनसे निकलने का एक ही जरिया है। वह जरिया मैंने पहले भी बता दिया और अब फिर बता दिया है। अगर तुम इन से निकल जाओगे तो सभी चीजें तुम्हारे ऊपर चंवर ढुलाएंगी। फिर मन ऋद्धियों–सिद्धियों का काम देना शुरु कर देगा। ये जो अपना घटियापन का काम करता था उनको छोड़ देगा और सभी ऋद्धियों–सिद्धियों का काम करना शुरू कर देगा। अगर तुम अपने मन को काबू में कर लेते हो तो। तुमने मन को काबू में करने वाले बूझागरों को नहीं देखा है क्या? पर वे तो इसको थोड़ा सा ही काबू करते हैं। संतमत में मन को काबू में करने वाले ब्रह्मलीन हो जाते हैं। तुमने देखे होंगे? वे क्या–क्या करते हैं? जब संत उस गति पर चले जाते हैं तो उनके दिव्य चक्षु खुल जाते हैं। सो यही इसको काबू करने का एक सबसे बड़ा काम है। इसका मैंने एक ही जरिया बताया है। यह है सतगुरु शरण। सतगुरु की शरण से बड़ा और कोई भी जरिया नहीं है। आगे कहते हैं–

भक्ति ज्ञान वैराग योग का मार्ग दिया बता।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, वहां कोए बिरला जा।।

अब ये बातें साफ खुल गई। मैंने ये सब बता ही दिया है कि बैरी मन में बसा हुआ है। अगर इस बैरी को पकड़ लिया तो यही भक्ति, ज्ञान और वैराग तथा योग का मार्ग बता देगा। ये मार्ग तुम्हारे सभी के खुलेंगे जब तुम इस एक जालिम को काबू में कर लोगे। भक्ति ज्ञान, वैराग और योग का मार्ग यही है कि इसको काबू में कर लो और वह मार्ग एक ही बात पर है। अगर इनको समझना है तो एक ही कड़ी में सारा सब कुछ है। सो उस जगह कोई बिरला ही पहुंचता है। क्योंकि यह मैंने पहले ही बता दिया है कि मन का जीतना आसान नहीं है। जैसे दोहा पहले कहा था–

नानक मन जीता, जुग जीता।

यह तो बिरले की ही बस की बात है। हरेक के बस की बात नहीं है। इसको कोई काबू कर नहीं सकता है। यह मन तो नाच नचाता है। जब इस मन ने बहुत बड़े–बड़े तपस्वियों को शिखर से पटक दिया है तो फिर बताओ हमारी कौन सी गति है? मन के ही कारण से रामचन्द्र जी ने क ष्ण का अवतार लिया। वे क ष्ण के रूप में आए। क्योंकि उन्होंने अपने मन के कारण ही बाली को तीर मारा था। संतों ने तो किसी को तीर नहीं मारा। उन्होंने तो शब्द का तीर मारा है। सो कर्म का भोग तो सभी को ही भोगना पड़ता है। इससे बचने का रास्ता केवल सुरत शब्द का अभ्यास ही है। वह एक नाम ही है और कोई भी नहीं। अगर बचना चाहते हो तो। आगे तुम्हारी मर्जी है।

सत्संगियों ! इस रास्ते पर चलना हरेक के बस की बात नहीं है। पर इस सुरत–शब्द के योग को तो 60 वर्ष का भी कर सकता है और आठ वर्ष का भी कर सकता है। पर हमारे देश में तो अनेक

गुरु बन बैठे हैं। आप कुंडा उठाकर देखो। गुरुओं का ठिकाना ही नहीं है। फिर भी देश बिगड़ता जा रहा है। आप यह पूछ ही नहीं सकते हो कि देश क्यों बिगड़ता जा रहा है। क्या बात है? मैं कहता हूं कि उन गुरुओं में कमी है। कौन सी कमी है? हमारे जैसे जो दाढ़ी रखवा कर बैठ जाते हैं उनके दिल में कोई वासना होती है। वह वासना ही उनको बर्बाद करती रहती है। जो उस वासना से दूर हो जाते हैं तो फिर उनके सत्संगी नहीं बिगड़ते हैं। वे सुधार जाते हैं। आप उसकी निशानी पूछोगे। उसकी निशानी यही है कि पूर्ण संत के सत्संगी किसी से विरोध नहीं करेंगे। दूसरे की निंदा करना आज का बड़ा तोपखाना है। वह उसकी बुराई करता है और वह उसकी। पूर्ण सतगुरु किसी से घ णा कराने के लिए नहीं आता है। सारी दुनिया का कर्त्ता एक है।

सतगुरु न तो कभी गर्भ में आता है और न ही वह किसी मां से जन्मता है। वह तो एक शब्द ही सारी दुनिया का कर्ता है। वह सारी दुनिया की जान है। वह सब के अंदर है।

ज्यों तिल में तेल है, और चकमक में आग।

दूध में घी है और मेंहदी में रंग है। इसी प्रकार से वह सब के अंदर बैठा हुआ है। पर यत्न के बिना वह निकल नहीं सकता है यदि यत्न करोगे तो तुम सब ही प्रगट कर सकते हो। जो तुम मेरे मुंह की तरफ देखते हो, तुम भी तो ऐसा काम कर सकते हो। मैं तो कुछ भी धन नहीं हूं। तुम विद्वान भी हो और पैसे वाले भी हो। रूप वाले भी हो। मुझे एक बूढ़ा सा मेरा गुरु भाई सत्संगी बोला–मैं कहीं जा रहा था। उसने कहा–महाराज जी तो महाराज जी ही है, बहुत बढ़िया है। पर बात यह है कि रहा जाट का जाट ही। मैंने कहा–क्यों? उसने कहा–टेढ़ा पांव करके चलता है। एक ने कहा–है तो बढ़िया पर निचला होंठ मोटा है। बताओ। ये नुक्स बताए मेरे

अंतर तो। मैं अपने गुरु भाइयों की बातें बताता हूं। सो जिसे किसी चीज का पता न हो तो वह बेचारा क्या करेगा? उसके सामने मेरा एक गुरु भाई प्रक ति और तत्व बताने लग गया। उसने कहा–मैं तेरी बातें नहीं मानता हूं। उसने पूछा–फिर तू किसकी मानेगा? तो उसने उतर दिया–दिनोदिया महाराज बता देगा तो मान लूंगा। वह तो उसको सही बता रहा था। उसकी बात नहीं मानी। फिर मैंने उसको कहा–भाई ! पच्चीस प्रक तियां ये हैं। उसने पूछा–कहां–कहां हैं। मैंने कहा–यह एक तो बगल में है और एक तेरे शरीर में इस जगह और तीसरी, चौथी इन–इन जगहों पर हैं। ये प्रक तियां हैं तो उसने कहा–देखा भाई ! वे तो ये होती हैं। जैसे इन्होंने बता दी कि इन–इन स्थानों पर होती हैं। यह पूरा महात्मा है।

फूटी आंख विवेक की, गिने न संत असंत।
जिसके संग दस बीस, उसी का नाम महंत।।

मैं गाड़ी में गया था तो उसने सोचा कि महाराज तो पूरा है। यह बता देगा। जो इसने बताई है। ये बात पूरी बता दी है। सो भाई किसी को कुछ भी समझा दो और कुछ भी बता दो। जिसको पता नहीं है तो उसको पता लगता भी नहीं है। पर आप लोगों को बताता हूं–

जब तक देखूं न अपनी नैना।
तब लग मानूं न गुरु के बैना।।

सतगुरु की बातों को मान लो और अभ्यास करो।

जा को दर्शन इत है, वा को दर्शन उत।
जा को दर्शन इत नहीं, वा को इत न उत।।

क्या सोचते हो? कीर्तन तो हम सभी कर सकते हैं। अगर भागवत पढ़ने की कहते हो तो उसको तो कोई भी पढ़ा लिखा पढ़

सकता है। यह तो हमारी परम्परा है। क्योंकि पहले हमारे छोटे भाई पढ़ा नहीं करते थे। हमारे बुजुर्ग ब्राह्मण ही पढ़ा करते थे। सो वह कथा उन ब्राह्मणों से पढ़वाते थे। विद्वान कोई भी हो। आज हमारे छोटे भाइयों में बड़े–बड़े विद्वान भी हैं और बड़ी–बड़ी रहणी सहणी के भी हैं। अगर वे भागवत और गीता पढ़ते हैं तो कोई भी नुकसान नहीं है। पढ़ा लिखा तो गीता भागवत को पढ़ ही सकता है। पर संत तो उस गीता और भागवत की बड़ाई करते हैं जो अनुभव में आती है। कौन सी रामायण की बड़ाई करते हैं? जो तुलसीदास और रामायण से भी पहले थी। यह रामायण तो इन ऋषियों की बनाई हुई है। वह रामायण तो तुम्हारे अंतर में है। इन लिखे हुए कागजों को तो सभी पढ़ सकते हैं। पढ़े लिखे सभी पुस्तकों को पढ़ सकते हैं। वे तो रास्ता बताने वाली हैं। काम तो इंसान को ही करना पड़ेगा। किताबें तो केवल मार्ग बता देंगी कि यह करने से ऐसा होगा और वो करने से वैसा हो जाएगा। पर सारी जिन्दगी पढ़ते रहोगे तो होगा कुछ भी नहीं। पढ़ना लिखना तो कुछ नहीं होता है।

पढ़ना लिखना चातरी, ये गुड़ियों का खेल।
जब मिली सच्चे पीव से, देई ताक में मेहल।।

सो इनसे तो झगड़ा ही फैलता है। स्वामी जी कहते हैं–

हे विद्या तू बड़ी अविद्या, तू संतन की कद्र न जानी।
संत केवल प्रेम के सिंधु, तू उल्टी बुद्धि कीचड़ सानी।।

कबीर साहब फिर कहते हैं–

विद्या माहिं वाद है, तप माहिं ऋद्धि।
नाम माहिं मुक्ति, योग माहिं सिद्धि।।

मुक्ति तो नाम में ही है। नाम जिसको मिल गया उसका जीवन सफल हो गया। मैं यह बात नहीं कहता कि नाम जिस को

मिल गया सफल हो गया। नहीं, जिसने शरण ले ली उसकी एक सौ एक पीढ़ियां सफल हो गई। उसे कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। कबीर साहब ने कहा है–

एक सौ एक पीढ़ी तारे म्हारी हेली, जो कोई तारण हो।

मैंने आज आप लोगों को शरण की और मन की बातें बताई। शरण लेना ही सब से बड़ी बात है। दूसरी बात है कि मन काबू में कब आएगा। जब सतगुरु की शरण लोगे तभी मन काबू में आएगा। तीसरी बात ये भी बताई है कि तुम तन, मन और धन दे दो। ये तीनों चीजें तो अपने पास रखो। तो फिर क्या दोगे? तुम सतगुरु में श्रद्धा रखो। उसमें विश्वास रखो। तिर जाओगे। मैं बार–बार एक बात बताया करता हूं। दो चीजों का ख्याल रखो। कुछ भी मत करो फिर।

गुरु दर्शन की प्यास और वचन पर विश्वास।

सो मैंने तो तन, मन, धन देने की तो बात नहीं कही। यही बताया है कि जिसका विश्वास है उसका बेड़ा पार है। सो तसल्ली विश्वास से काम करो। जिसे गुरु दर्शन की प्यास है और वचन पर विश्वास है उसका जीवन सफल हो जाएगा। मैं तो आप का एक सेवादार हूं। गुरु नहीं हूं। गुरु तुम्हारे अंदर बैठा है। मैं तो उसका भेद बताता हूं। मेरे गुरु की ड्यूटी बजाता हूं। सब का भाई हूं। माताओं और बूढ़ियों का बेटा हूं। जवानों का भाई हूं। उस वक्त सतगुरु मान लेना जब तुम्हारा काम पूरा हो और अन्तर में रास्ता दे दे। अंतर में कोई भेद बता दे। अंतर में जब तुम्हारी मदद करे तो तब कुछ भी कह लेना तुम्हारी मर्जी है। उससे पहले ज्यादा करो तो बड़ा भाई समझ लो। यह भी मैंने बता दिया है कि सतगुरु तुम्हारे अंदर बैठा है और सतगुरु की बातें मैंने खोल कर बताई हैं।

नमो नमो सत पुरुष को नमस्कार गुरु कीन्ह।
सुर नर मुनिजन साधुवां संतां सर्वस दीन्ह।।
गुरु की महिमा क्या कहूं, साख भरै सैं वेद।
बिन सतगुरु नहीं पाइए अगम पंथ का भेद।।

मैंने पहले एक दोहा कहा था–

आए थे किस काम को कर बैठे के बात।
के मुख ले मिलिए राम से खाली दोनों हाथ।।

यही कबीर साहब जी कहते हैं–

बाबल भेजी बणज को, गई रे डगरिया भूल।
कुल ममता में आये के, ब्याज गंवां दिया मूल।।
जाऊं जाऊं सब करैं, मोहे अंदेशा और।
सतगुरु के परिचय बिना, पहुंचोगे किस ठौर।।
के मुख ले हंस बोलिये, दादू रे दीजे रोय।
जनम अमोलक आपना, चले अकारथ खोय।।

बणज कैसा किया रे, औ सौदागर ब्यौपारी।
बणज कैसा किया रे, औ लालों के व्यौहारी।।
बौदी गूण बैल हैं बूढ़े बोझा भर लिया भारी।
जाना दूर पहुंचना मुश्किल मूर्ख नाहिं विचारी।।
आगे एक ठगों की नगरी, वहां जा बालद ढाली।
तू तो भोंदू पड़के सो गया, खेप लुटा दई सारी।।
साहूकार की पूंजी लाया, देनी नहीं विचारी।
आगे की तेरी पड़त उठ गई, कौड़ी नहीं उधारी।।
किसे नै भरली लौंग सुपारी, किसे नै सांभर खारी।
संता भर लिया नाम हरि का, विष बिणजे संसारी।।
जग में निंदा राजा डांटे, आगे जमपुर तैयारी।।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, खोटी नीत तुम्हारी।

यह कबीर साहब का ही शब्द है। उन्होंने बहुत खोल कर कह दिया कि तूने यह कैसा सौदा किया। भाई ! तू तो लालों का व्यौहारी था। जब लाख जन्मों का पुण्य इकट्ठा होता है तब मानस का चोला मिलता है। 2 लाख जन्मों का पुण्य इकट्ठा होने पर सत्संग मिलता है। तीन लाख जन्म का पुण्य इकट्ठा होकर संत सतगुरु मिलता है। अब इतना भारी सौदा करने के लिए आए थे। हमने तो अपनी पूंजी भी सारी बर्बाद कर दी।

मोटी गलती खाई रे,
लाख जन्म की करी कमाई, धूल मिलाई रे।

अर्थात् लाखों जन्मों की कमाई करने के बाद मानस का चोला मिला था। वह कमाई अब धूल में मिला दी है। धूल में किसने मिला दी? यह उस बैरी ने मिला दी। जो अपने गांव में बसा हुआ है। उस बैरी ने अपनी सारी कमाई धूल में मिला दी। किसी को किसी चीज का आनन्द आ गया। कोई किसी में फंस गया और कोई किसी चीज में जा फंसा। इन विकारों में फंस कर अपना सारा ही जीवन बर्बाद कर लिया। इसीलिए कबीर साहब जी कहते हैं आगे एक ठगों की नगरी है वहां जाकर बालद ढाल ली। किसी के पास चार पैसे हैं और वह कहीं बाहर जा रहा है आगे उसको ठग मिल जाते हैं। उसको जहर के लड्डू खिला कर उसकी जेब काट लेते हैं। या उसको कुछ पिला देते हैं। हमारे एक राव जी रहता है। वह अपने गांव गया था। उसके पास पैसे थे। स्टेशन पर किसी ने कहा–कौन से गांव का है? उसने कहा–फलां गांव का हूं। उसने कहा–मैं भी वहीं का हूं। मेरी रिश्तेदारी है। उसने पूछा किसके? तो बता दिया कि मैं उनको जानता हूं। वह दूध ले आया। उसने कहा–मैं दूध नहीं पिया करता। तो उसने कहा–अगर तू दूध नहीं पीएगा तो कल तेरे वे रिश्तेदार उलाहना

देंगे। उसको प्यारा बोल कर दूध पिला दिया। अब वह तो बेहोश हो गया। उसके पास 200–300 रुपये थे। सब निकाल कर ले गया। वह तो बाहर का ठग था, बाहर का जहर पिला दिया। तुम्हें ये अंतर के ठग अन्तर का जहर पिला रहे हैं।

एक बार मां से बेटा कुछ मांग ले तो वह उसको सब कुछ दे देगी। कह देगी ले ले जा बेटा और अगर बेटा कमर में लात भी मार दे तो उसके फिर भी कलेजे में तो खुशी होती है। कोई बात नहीं, बेटे की लात कहां पड़ी है। सो मां तो मां ही होती है। जो मां की सेवा कर जाता है उसका बदला उतर जाता है। मां की सेवा तो कोई भागी ही करता है और भागी की मां ही जिंदा रहती है। मां–बाप की सेवा ऐसी है। बड़ा भागी होता है जो मां–बाप की सेवा करता है। सो आगे कहते हैं–

तू तो भोंदू पड़ के सोग्या, खेप लुटा दी सारी।

कौन सी खेप लुटा दी? जो लाख जन्मों की कमाई से मानस का चोला मिला था वह सारी पूंजी लुटा दी।

साहूकार की पूंजी लाया देनी नहीं विचारी।
आगे की तेरी पड़त ऊठगी कौड़ी नहीं उधारी।।

अब आगे कौड़ी उधारी नहीं मिलेगी। एक बार साहूकार से पैसे ले आओ। वापिस नहीं दोगे तो वह आगे नहीं देगा। सो कुल मालिक राधास्वामी दयाल भी साहूकार है। हम उससे पूंजी लेकर आए थे। वह पूंजी हमने विषय–विकारों में बर्बाद कर दी। वह आगे फिर नहीं देगा। जैसे काठ की हांडी एक बार ही चढ़ती है वैसे ही ये चोला भी एक ही बार मिलता है। उसको हम बर्बाद कर चले। इसीलिए कहते हैं–

अबके चूके नहीं ठिकाना।
दिन पर दिन चोला होय पुराना।।

तू करले बंदे भजन हरि का।
फिर के बनेगा इस खोड़ मरी का।।

उस साहूकार की पूंजी हमने बर्बाद कर दी। अब बुढ़ापा आया है तो रोना शुरू कर दिया है। अब क्या करें? लड़के भी बात नहीं करते तो क्या बनेगा। मेरे पास कई दिन हुए पहलवान और कई भाई पास में बैठे थे, एक माई ने आकर कहा–मैं तो यही रहूंगी। मेरे बेटे बहुओं ने मैं निकाल दी। मेरे उन्होंने चोट मारी। ये किया और वह किया। थोड़ी देर के बाद ही उसने कहा–मेरी बहू बीमार रहती है उसके लिए दवाई दे दोगे? मैंने कहा–दे दूंगा। मैंने पहले ही कह दिया था कि ये रहेगी नहीं। जाएगी। यहां नहीं ठहरेगी। मैंने कहा–माता जी ! ठहर जा मेरा तो भाग अच्छा है। मैं आप जैसों की सेवा कर लूंगा। उसने कहा–क्या करूं, बहू–बेटों के पास जाना तो पड़ेगा। मैंने कहा–तू कुछ दिन तो ठहर जाती। वह आप ही लेने आ जाते। उसने कहा–नहीं, मेरा मन कर रहा है जाऊंगी। दूसरे ही दिन तैयार होकर चली गई। अब मैं किसके बहू–बेटों के पास जाऊं? उसके तो थे। पर यह मीठी जेल है। फिर बाद में सब रोते हैं कि पता नहीं था। मैं उनको किस–तरह छुटवाऊं? सो ही कबीर साहब ने कहा है–

तू तो भोंदू पड़के सोग्या खेप लुटा दी सारी।
साहूकार की पूंजी लाया देनी नाहिं विचारी।
आगे की तेरी पड़त ऊठ गई कौड़ी नहीं उधारी।।
किसी ने भर ली लौंग सुपारी किसी ने सांभर खारी।
संता भर लिया नाम हरि का, विष बिणजे संसारी।।

किसी ने तो सौदा लौंग–सुपारी का किया और किसी ने खारी सांभर इकट्ठी कर ली। नमक की तरह पाप भर लिया। किसी ने लोंग सुपारी की तरह अच्छे कर्म करके पुण्य भर लिया। संतों ने हरि का नाम भर लिया और विषय बिणजै संसारी। संत

तो नाम की कमाई करके चले गए। किसी–किसी ने तीर्थ, पूजा–पाठ करके लौंग सुपारी भरी। व्रत आदि कर लिए यह नमक है। फिर जो घटिया पापी हैं उन्होंने अपना काला मुंह कर लिया। संसारी लोग तो सभी पाप खरीद कर बैठ जाते हैं।

इसलिए संतों, महात्माओं के सत्संगों में जाया करो। बैठा करो। चाहे कोई कहीं भी बैठो पर जहां दूसरे की निंदा होती हो वहां मत बैठो कभी भी। जहां सत्संग और प्रेम हो वहां बैठो। दूसरों से जो घ णा दिलाते हैं वहां क्या लोगे? जो दूसरों से घ णा दिलाते हैं उनके खुद में ही घ णा भरी पड़ी है। वे संसार से निकलने नहीं देते। खुद सत्संग किया करो। अपने विचार पवित्र रखा करो। जिसके विचार पवित्र हैं उनका जीवन भी पवित्र है। उसका सब कुछ पवित्र है। जिसके विचार गंदे हैं चाहे कितनी ही ब्रह्मवाणी गाता रहे, वह कभी न कभी गिर जाएगा। सो विचार ऊंचे और पवित्र रखो। तिर जाओगे।

।। राधास्वामी ।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

अप्रेल 2006 मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	बनवासा	27 मार्च -	02 अप्रैल
2.	गोहाना	03 अप्रैल -	09 अप्रैल
3.	कैथल	10 अप्रैल -	16 अप्रैल
4.	इस्माइलपुर	17 अप्रैल -	23 अप्रैल

सत्संग

महर्षि शिवव्रत लाल जी

सत्संग करने का ढंग यह है कि सब वृतियों को एकाग्र करके गुरु के सामने शिष्टाचार के साथ बैठो। यह शिष्टाचार का मार्ग है। जिसमें यह शिष्टाचार या अदब नहीं है वह परमार्थ की सम्पदा से वंचित रहेगा। न उसका मन चंचलता के स्वभाव का त्यागन करेगा और न वह गुरु के वचनों को ध्यान से सुन सकेगा। सत्संग में इस शिष्टाचार के नियमों का ध्यान पहली शर्त है। मन की शिष्टता और संयम के बिना न बाहरी सत्संग कोई आनन्द देगा और न अन्दर तुमसे कमाई हो सकेगी।

प्राय: अभ्यासी कहते हैं कि मन बड़ा चंचल है। भाई क्यों चंचल है? क्योंकि तुम संयम से नहीं रहे। क्योंकि निकम्मी आदत पड़ गई है। जब ध्यान करने बैठे उस समय गुरु का ख्याल नहीं आता। जरा इस अदब के मार्ग का लिहाज करना सीखो। तुम्हारे भीतर और बाहर प्रकाश और शब्द दोनों की वर्षा होने लगेगी।

आंखे गुरु की शक्ल की ओर हों, इधर-उधर न बहकने पावें ताकि उस शक्ल का प्रतिबिम्ब आंखों की राह से होकर मन में पड़े और मन रूपी दर्पण अपने भीतर उसके प्रतिबिम्ब को ले ले। कान गुरु की और खुले रहें, ताकि उनके वचनों की धार कानों के रास्ते से होकर मन और मष्तिष्क में प्रवेश कर जाये। यह अदब और शिष्टाचार का ढंग है। एक सप्ताह इसका साधन हो। अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं। एक सप्ताह के अन्दर बाहरी सत्संग की सहायता से मन काबू में आने लगेगा और फिर वह अपनी चंचलता भूल जायेगा और गुरु के साथ तन से, मन से, श्रवण से और आत्मा से समता की दशा में हो जायेगा।

अनमोल वचन

पुण्य और पाप इकट्ठे होते हैं, तब हमें इन्सान का जामा मिलता है। इस शरीर में बैठकर हमें उन पुण्यों का भी हिसाब देना है और उन पापों का भी हिसाब देना है। उन पुण्यों का हिसाब देते हुए हम सुखी हो रहें हैं और पापों का हिसाब देते हुए दुखी हो रहे हैं। *—गुरु अमरदास जी*

जो मनुष्य वापिस अपने घर पहुंच जाते हैं वे हमेशा के लिये सुख और शान्ति प्राप्त कर लेते हैं। अपना घर कौन सा है? जहां परमात्मा रहता है। हमारी आत्मा उस परमात्मा से मिलकर ही हमेशा के लिये सुख और शान्ति प्राप्त कर सकती है। *—गुरु नानक साहिब*

जिस परमात्मा को मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों में ढूंढ़ते फिरते हो, वह परमात्मा तो चौबीस घण्टे तुम्हारे साथ है, तुम्हारे शरीर के अन्दर है। *—पलटू साहिब*

ज्ञान-सार

जब तक दूसरों का कर्ज चुका नहीं दिया जाता तब तक हम कभी सदाचारी नहीं कहला सकते और हमें स्वर्ग में प्रवेश भी नहीं मिल सकता।

हे मनुष्य ! इतना जोश-खरोश न दिखा, इस दुनिया में बहुत से दरिया बढ़ चढ़कर उतर गये, कितने ही बाग लगे और सूख गये।

मनुष्य के घमण्ड का कुछ ठिकाना नहीं, किसी को कुछ नहीं समझता। मौत ने इसे लाचार कर रखा है, वरना यह ईश्वर को भी कुछ नहीं समझता।

एक मनुष्य दूसरे मनुष्य की आंखों में धूल झोंक सकता है, पर परमात्मा की आंखों में धूल नहीं झोंकी जा सकती।

सत्संग भावांश अण्टा - 2.2.2006

जब तक समाज के सामने मुक्ति, देश भक्ति और परोपकार जैसे उच्च आदर्श सामने नहीं होंगे, तब तक समाज के पतन को कोई भी नहीं रोक सकता है। आज मनुष्य जीवन का ध्येय ऐश और आराम भोगना हो गया है। इसीलिए पैसा ही लोगों का खुदा बन गया है। इस सामाजिक पतन के लिए कुछ सन्त महात्मा भी दोषी होने से नहीं बच सकते हैं। उक्त विचार राधास्वामी परम सन्त हुजूर कंवर साहब जी महाराज ने अपनी साध संगत को एक सत्संग बख्शते समय व्यक्त किए। उन्होंने फर्माया कि-

जान बूझ साची तजे, करे झूठ से नेह।
वाकी संगत राम जी सुपनेहू मत देय।।

आज का इन्सान विषय का कीड़ा बन गया है। इसी कारण से मनुष्य का पतन इस सीमा तक पहुंच गया है कि लोग कुत्ते कर्म करने से भी नहीं चूकते हैं। कुत्ते को तो प्रकृति ने ही वे कर्म करने के लिए बाध्य किया है परन्तु मनुष्य ने तो अपनी ऐसी दयनीय अवस्था स्वयं अपने ऊंचे आदर्शों को तिलांजलि देकर ही बना ली है।

लोगों के सामने मुक्ति, देश भक्ति और परोपकार जैसे उच्च आदर्श केवल मात्र समाज को धोखा देने के लिए ही रह गए हैं। सभी एक दूसरे को धोखा दे रहे हैं। आज किसी का किसी पर विश्वास नहीं रह गया है। जब किसी के सामने उच्च आदर्श होता है तो वह स्वयं ही अपना मार्ग बना लेता है। शहीद राज शेखर और शहीद भगत सिंह के सामने देश भक्ति का उच्च आदर्श था। इतिहास गवाह है उनको फांसी किसी ने भी नहीं दी। वे बहुत ही

आराम से फांसी से बच सकते थे। परन्तु स्वयं ही अपने गलों में फन्दे डालकर फांसी के तख्तों पर झूल गए थे।

आज तो संसारी लोग ऐश आराम से खुशी-2 वर्ष के 365 दिन ऐश आराम में व्यतीत करते हैं और जब 366 वें दिन कोई दुख आ पड़ते हैं, तो उनको साधु महात्मा, गुरु पीर, मन्दिर, मस्जिद और ध्यान भजन याद आते हैं। तब वे सन्तों के पास जाकर अपने रोने रोते हैं कि मुझे कैंसर हो गया है, मैं मरूंगा, मेरा लड़का बीमार है, मुझे टोटा लग गया है, मेरी भैंस दूध नहीं देती है। परन्तु सन्त तो फिर भी दयालु होते हैं। वे उन पर दया कर देते हैं। स्वामी जी कहते हैं कि-

जब जब मार पड़ी दुखन की, डर डर भजन कियो री।
देखो दया-मेहर सतगुरु की, उसी भजन को मान लिया री।।

जब साधु महात्मा स्वयं ही सच्चाई व आदर्श को त्याग बैठते हैं तो वे लोगों को न ही ऊंचे आदर्श दे सकते हैं और न ही उनमें सेवा, त्याग और प्यार-प्रेम जैसी भावनाएं ही भर सकते हैं। कई कथित सन्त सतगुरु हमारी आलोचनाएं करते हैं कि ये सेवा लेते हैं जब कि वे स्वयं अपने शिष्यों को कहते हैं कि सेवा सब के सामने नहीं बाद में दे देना। जब कोई भण्डारे लगाता है और सत्संगी स्वयं खाने-पीने का भार लेकर नहीं जाना चाहते हैं तब वे अपनी इच्छा से अपनी मुट्ठी में रखकर कुछ सेवा में देता है तो इससे उनकी सेवा त्याग और प्यार प्रेम की भावना ही प्रगट होती है। उनसे कोई कुछ छीन कर तो नहीं लेते हैं। परन्तु जो सतगुरु छुपाकर सेवा लेते हैं और कहते हैं कि वे सेवा नहीं लेते हैं। फिर तो वे स्वयं सच्चाई पर पर्दा डालते हैं। वे सतगुरु नहीं ये तो कपट गुरु ही कहे जा सकते हैं।

ऐसी अवस्था में वे तथा कथित सन्त-महात्मा अपने शिष्यों को ऊंचे आदर्श कैसे दे सकते हैं और उनमें क्या गुण भर सकते हैं? यह एक विचारणीय विषय है। ■

''मैं माया राठौड़ पत्नी श्री भुपेन्द्र सिंह जी अपने ऊपर हुई परम पूज्य संत गुरुदेव की अपार कृपा का वृतान्त संक्षित शब्दों में लिख रही हूं।

मेरी शादी 26 मई, 2002 को हुई थी। जब मैं ससुराल पहुंची तो देखा कि सब लोग बड़े ही अच्छे हैं। मैं एक दिन अपने कमरे की सफाई कर रही थी तो मुझे एक बनियान मिली जो मेरे पति की थी। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि बनियान पर लाल दाग कैसे लगे हैं। मैंने अपनी सासु जी को जब यह बातें बताई तो उन्होंने मुझे सारी बात समझाई। उन्होंने बताया कि ये लाल दाग मेरे पति की बनियान पर काफी समय से लग रहे हैं और किसी सयाने ने कहा है कि इनके ऐसे ही दाग आगे भी लग सकते हैं और इनको कुछ संकट है। मैं इन सब बातों में और सयाने-भोपों में विश्वास नहीं करती हूं, क्योंकि हम बचपन से ही राधास्वामी हैं। मेरी माता जी की नानी जी परम आदरणीय हुजूर महाराज ताराचन्द जी की धर्म बहन बनी हुई थी। उनका नाम भरपाई था जो देवसर की थी। इस कारण हमारा दिनोद आश्रम में अक्सर आना होता रहा है। यह बातें जब मैंने अपनी मां को बताई तो उन्होंने तुरंत मुझे और मेरे पति को बुलाकर हमें महाराज जी के यहां लाई और उन्हें सारा वृतान्त बताया।

महाराज जी ने हमारे माथे पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया कि कितना ही कोई दाग लगा ले और कितना ही बुरा करने का प्रयत्न कर ले लेकिन इनका बाल भी बांका नहीं होगा। वो दिन है और आज का दिन है गुरु जी की कृपा से उस दिन के बाद उनकी (मेरे पति) बनियान पर कभी दाग नहीं लगे। ये महाराज जी की हम पर अपार कृपा हुई है और हम यही महाराज जी से विनती करते हैं कि प्रतिपल प्रतिक्षण उनकी कृपा दृष्टि हम पर बनी रहे और हम उनकी छत्रछाया तले एक बालक की तरह आनन्दित रहें ! गुरु जी हमें सदैव सन्मार्ग पर रखे व हमारा मार्ग दर्शन प्रतिपल करते रहें !''

राधास्वामी !

माया राठौड़
पत्नी श्री भूपेन्द्र जी शेखावत,
सैनिक बस्ती, मकान नं.-सी.-31,
चुरू (राजस्थान)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

परम सन्त हुजूर ताराचन्द जी महाराज के "अनमोल चरित्र" से

जब तुम ध्यान में बैठकर उकता जाते हो, थक जाते हो तो समझ लो कि अभी तुम्हारा ध्यान कच्चा है। मैं मेरे मास्टर की बड़ाई इसलिये करता हूं कि जब ये ध्यान में बैठ जाता है तो सब कुछ भूल जाता है। जब तुम ध्यान में बैठते हो और तुम्हारे दिल में यह बात रहती है कि मुझे तो बैठे हुए बहुत ज्यादा देर हुई है या तुम्हें यह ध्यान हो जाता है कि मेरी फलां जगह दर्द है तो समझो अभी तुम्हारा ध्यान नहीं लगा है। मैं तो अपना तजुर्बा बताता हूं। जब तुम ध्यान में बैठ कर सब कुछ ही भूल जाते हो तो उस वक्त यह सोच लेना कि अब हमारा काम होना शुरु हो गया है। चाहे 2 घण्टे बैठो। जब उठोगे तो यही सोचोग कि जैसे ध्यान में बैठे 10 मिनट हुई है। कभी भी थकावट नहीं होगी। जब तुम सिनेमा देखने जाते हो तो क्या कभी थकावट होती है? कूदते हुए जाते हो और कूदते हुए आते हो और जब बच्चे मेला देखने के लिये जाते हैं तो वे भी कूदते हुए जाते हैं और कुदते हुए आते हैं। इसी तरह से यह भी एक फिल्म और मेला है। उसको देखने से तो थकावट दूर हो जाती है।

मेरे बाद में ही सही, जब दिनोद गांव बहुत बड़ा शहर बन जायेगा सत्संग के चारों और दुकानें खुल जायेंगी। अब जो खेत है, वहां राधास्वामी कालोनी बन जायेगी। सत्संगी के अतिरिक्त किसी को रहने का अधिकार नहीं होगा। यह बात भी है कि मेरे जाने के बाद डण्डे का डर भी हो जायेगा। कोई भी आदमी जो घटिया काम करेगा, तो उसको बाहर निकाल दिया जायेगा। आज आते हैं बीमारी दूर कराने, बीमारी ठीक हो गई तो ठीक, नहीं तो छोड़ दो गुरु को। सन्तों के प्रसाद से बीमारी दूर हो जाती है। पर सत्संगी को भी अपने सतगुरु पर विश्वास होना चाहिये। जगह वही बड़ी होती है जहां आकर सब रोग छूट जायें, मलिन वासनाएं नष्ट हो जायें। ■

परम सन्त हुजूर कंवर साहिब जी महाराज के 59वें जन्म दिवस पर विशेष

राधास्वामी संत सतगुरु परमसन्त हुजूर कंवर जी महाराज का उद्भव 2 मार्च 1948 को गाँव दिनोद, जिला भिवानी में चौ0 सुरजा राम जी के यहाँ बड़भागिनी माता श्रीमती मुथरी देवी की कोख से हुआ। अभी हुजूर चार वर्ष के ही थे कि इनके सिर से पिता का साया उठ गया। विकट परिस्थितियों में हुजूर ने जयपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. की उपाधि ली। तदुपरान्त बी. एड. करने के बाद फिर सरकारी पद पर अध्यापक नियुक्त हुए। इस समय तक हुजूर का अध्यात्मिकता की ओर किंचित मात्र भी झुकाव नहीं था।

इस समय तक बड़े हुजूर द्वारा स्थापित राधास्वामी सत्संग एक आध्यात्मिक केन्द्र बन चुका था। अब आपमें हुजूर को समीप से जानने की प्रबल इच्छा हुई और एक दिन आश्रम में तशरीफ ले आए। उस समय सत्संग चल रहा था। आपने उनके व्यक्तित्व व प्रवचनों में अभूतपूर्व आकर्षण पाया। तत्पश्चात् आप प्रतिदिन आश्रम में आकर सत्संग सुनने लगे और फिर एक दिन जब अपने सद्गुरु के समक्ष आये, तो उन्हीं के होकर रह गए तथा फिर मुड़ कर घर नहीं गये, साथ ही यह भीष्म प्रतिज्ञा भी कर दी कि अब इस आश्रम से मेरी अरथी ही निकलेगी। इस समय आपकी आयु 30 वर्ष थी। बचपन का भक्त हीरे-मोती इकट्ठे करता है, युवावस्था का भक्त सोना-चांदी बटोरता है, बुढ़ापे के भक्त को केवल ताँबा-पीतल ही हाथ आता है। उसी

अनुसार पूर्व जन्म के संस्कारों के प्रभाव के परिणामस्वरूप हुजूर को अपना आध्यात्मिक मार्ग तय करते देर नहीं लगी तथा अपने सतगुरु के सान्निध्य में खूब साधन-अभ्यास किया। अब आपकी सारी-सारी रात भजन में बीतती थी। इसके साथ आपने अपने सतगुरु की तन-मन-धन से जो सेवा की वह अपने आप में एक मिसाल है। आपके आने के बाद धाम की व्यवस्था के प्रति बड़े हुजूर निश्चिंत हो गए। आपके सद्गुणों व सेवा से प्रसन्न होकर ही बड़े हुजूर आपको अपना 'हीरा' बताते थे। आपने गुरुधाम में रहकर भी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को बखूबी अंजाम दिया। परिणामत: सन् 1994 में आपका पूरा परिवार कनाडा में आबाद हो गया। अब आप पूर्णरूपेण अपने सतगुरु की सेवा में अर्पित हो गए।

परमसन्त ताराचन्द जी महाराज सन् 1997 के जनवरी मास की 3 तारीख को सत्संग की पूर्ण जिम्मेदारी अपने इन परम गुरुमुख के सबल हाथों में सौंपकर निजधाम प्रस्थान कर गए और अपनी पूर्ण धार हुजूर में स्थापित कर गए। आप पर जब यह जिम्मेदारी आई तब आप को परिवार के साथ कनाडा की नागरिकता मिल चुकी थी। लेकिन उस उन्नत देश के वैभव व सुखों को ठोकर मार कर आपने अपने शेष जीवन को भी सतगुरु के चैतन्य स्वरूप की सेवा यानि सत्संग के लिये झोंक दिया। वास्तव में आप धुर धाम से अपने सतगुरु के जोड़ीदार के रूप में ही आये हैं। सतगुरु के पवित्र प्रेम में पल्लवित पुष्पित और फलवित होते हुए आज आप उनके सारे कार्यों को उन्हीं के रूप में सम्भाले हुए हैं। इस अल्पकाल में ही आपने सत्संग को नए आयाम दिये हैं तथा सत्संग का चहुंमुखी विकास हुआ है। फलस्वरूप देश-विदेश में संगत और आश्रमों की लगातार वृद्धि

हो रही है। इसीलिए आज सत्संग अमेरीका, कनाडा, इंग्लैण्ड जैसे देशों के अतिरिक्त कतर, आबूधाबी, कुवैत आदि देशों तथा आस्ट्रेलिया महाद्वीप में भी फैलने लगा है।

आपकी सौम्य आभा में ऐसा अलौकिक जादू है कि जो भी जिज्ञासु आप से एक बार मिलता है, वह आपका ही होकर रह जाता है। जब तक हुजूर धाम में होते हैं धाम में आने वाली सड़कों पर लोगों का तांता लगा रहता है। हुजूर की नामदीक्षा पारे की तरह है जो इसे सौंधकर यानि नियमों के अनुसार प्रयोग करते हैं, उनका यह नाम उनके मुर्दा शरीरों को भी जीवित कर देता है। अधिकारी जीव तीन चीजें-धन, इज्जत और स्वास्थ्य तो हुजूर के नाम के साथ बख्शीश के रूप में ही प्राप्त कर लेता है।

राधास्वामी मत में न ही कोई भेष धारण करने की आवश्यकता है और न ही घर छोड़ने की जरूरत है। इसमें जीव को केवल अपनी बुरी आदतें छोड़नी पड़ती हैं। बल्कि यह काम भी सुरत-शब्द का योग स्वयं ही करवा लेता है। जीव में केवल परमार्थ की दृढ़ इच्छा होनी चाहिए।

हुजूर महाराज जी का तप व त्याग से परिपूर्ण जीवन अद्वितीय है। आज अन्यत्र इस प्रकार के त्यागी व तपस्वी शब्द भेदी परमसन्त सतगुरु का मिलना दुर्लभ है। हुजूर महाराज की संगत हुजूर के 59वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर उनसे विनती करती है कि जब तक संसार में एक भी दुखी जीव रहे वे अपना जहाज भव सागर के किनारे लगाये रहें !

।। राधास्वामी।।